THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO.
MBB—1971—84-36

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

Dec. 8, 1972
Date photographed

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB II

MBB-1972-84
1. Film strip number

22
2. Source

ANĀDISAṂSIDDHIYOGA
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEWĀRĪ
8. Script

20 cm. x 8 cm.
9. Size

7
10. Lines to a page

35
11. Number of leaves in complete work

12. Missing leaves

13. Author and Date of composition (if given)

14. Number of Chapters

15. Remarks
A practical book on Yoga

Dec. 8, 1972
Date photographed

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॐ आँ हूँ श्री मत् वज्रसत्त्व पूर्ण नवनाथ
सम्यक् ज्ञानावरण सर्व क्लायन मम हृदयं वज्र श्री वज्रसत्त्व वज्रवत
वज्र हुं वर्म माना पूर्ण वज्रायन त्रिमल क्षय कुरु वै तिस्मिं मम सर्व धर्म
ना जिन गुण सूत्रं मम हृदयं वज्र भव सर्व सिद्धि कुरु सुरु सुरु म
ना साधक माम ॐ रक्ष रक्ष सर्व भयेभ्यः रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
कर्म आत्मिक स्वभाव शुद्धि हुं काल वज्र यिना मम आत्मानं वज्र ज्ञानात्मकं

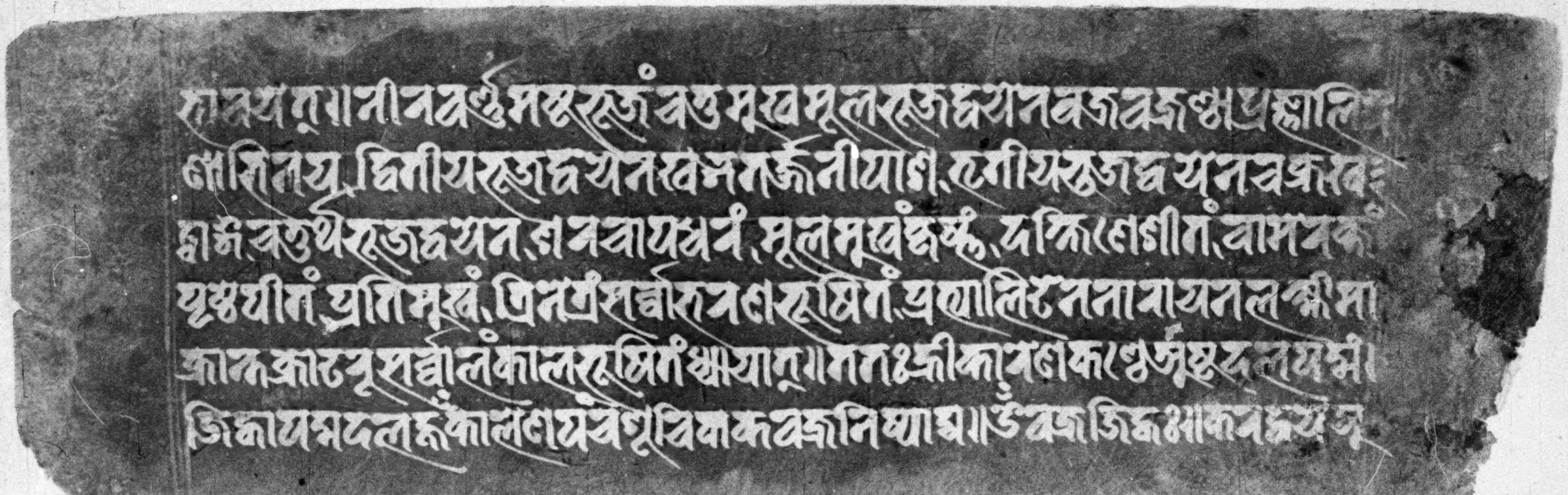

कामना वस्तु मनुलक्षयां. तयायमि हूँकाराय्यं वज्रसत्त्वी वज्रमयीं विचिन्त्य
कवचमाखाद्य वज्रविघ्नघातादिकं कुर्यात्। ॐ वज्रगा ॐ वज्रुंगा ॐ वज्रुंगा ॐ वज्रुंगा ॐ वज्रुंगा ॐ ३॥
ॐ वज्र ज्वालानला ॐ वज्रसम लोत लाक्षयीगा ॐ ३॥
कोरू वं॥ यवं॥ रूंजू रिमि
शुक्र शुक्र ऋमी शुक्र

ॐ वज्रतुण्डाय॥ ॐ वज्रज्वालातला ॐ वज्रानलदह ॐ वज्रतत्त्व
यौगा॥ कं हूँ॥ वामुष्टि हृदि यथमथ रक्ष रक्ष मां विघ्नान् हूँ॥ वज्रबन्ध
न्यस्य सर्वतो वज्रम् ॥शुक्ल॥ न्यासो॥ वज्र॥
स्राय॥ शुक्ल

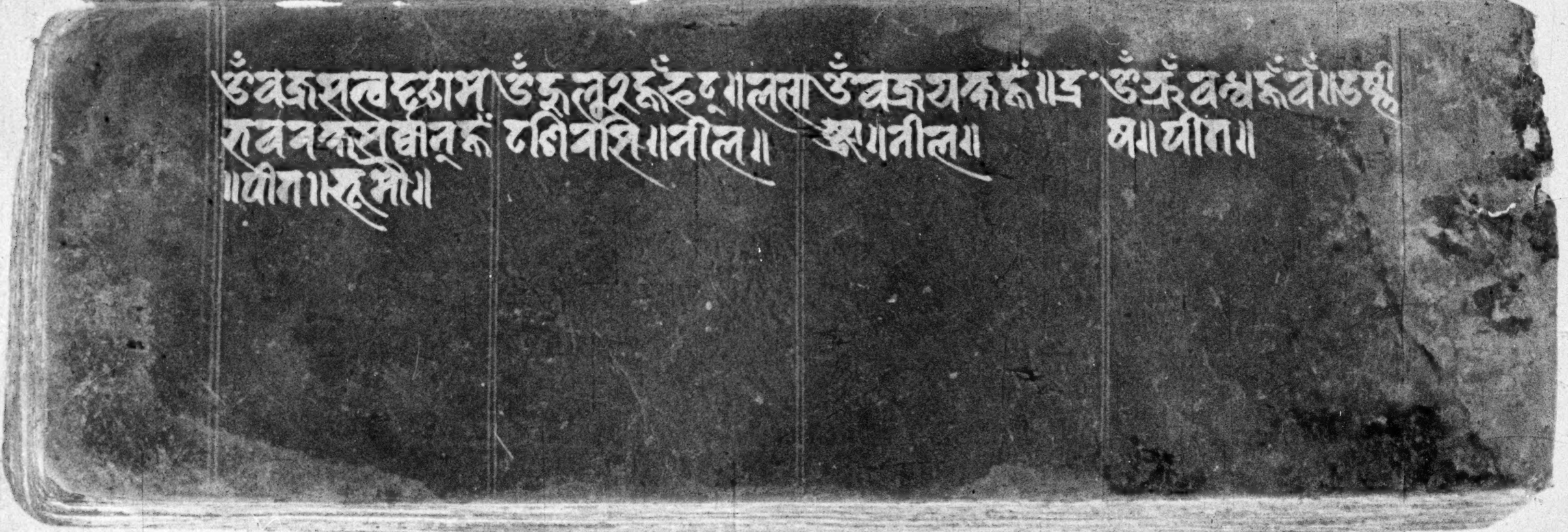
ॐ वज्रसत्त्वसमय
रक्षमकसेवीत्रूं
॥पीतासनस्थ॥
ॐ हूलुरूंहूंद्वालला
वलिवसिनीलं॥
ॐ वज्रयक्षमूं॥
नीलं॥
ॐ क्रूं वज्रकूंवांडमूं
॥पीतं॥

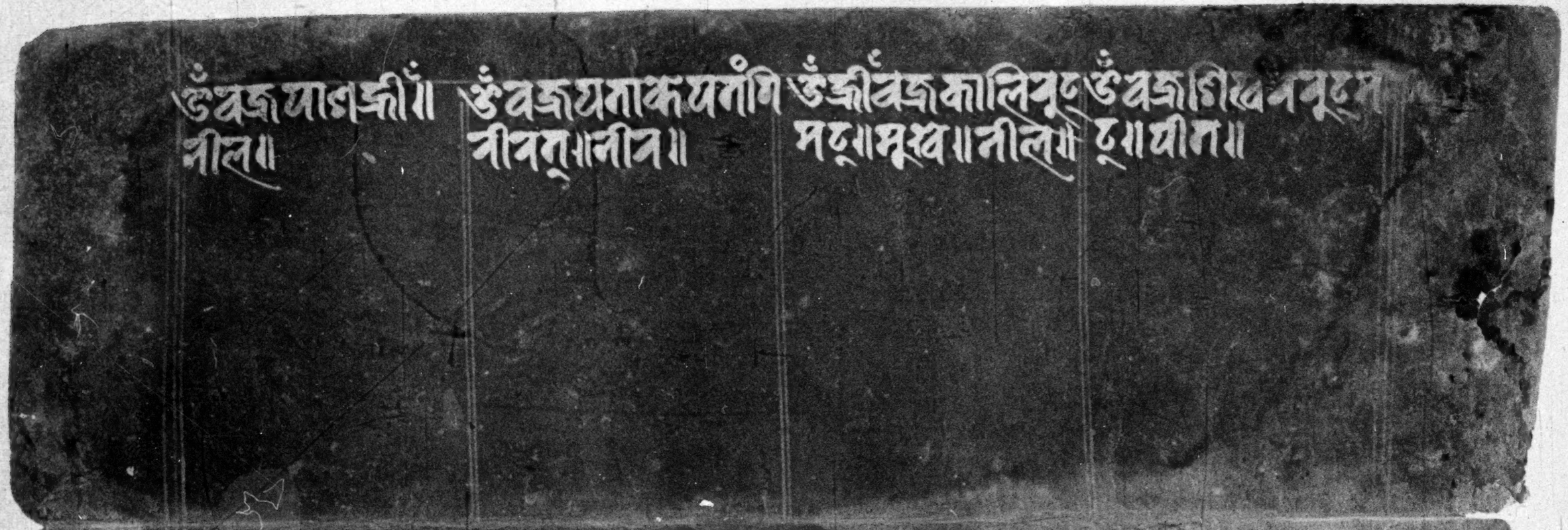
ॐवज्रयाम्रक्रीं॥
नील॥
ॐवज्रयमाक्षयमंमि
मीवसुमालीन॥
ॐक्रींवज्रकालिवु
मदुरामुख॥नीलमे
ॐवज्रशिखनमूर्
ध्वपीत॥

ॐ वज्रकर्म्मकः॥ ॐ वज्र हूँ काननलः॥ ॐ वज्रवश्य वँ गायी॥ ॐ वज्रानलकनद
विघ्न॥ नील॥ हयग्रीवरक्षव
लहूँ हूँ हाण्डु ज्ञा॥
पूजी
ज्ञानि

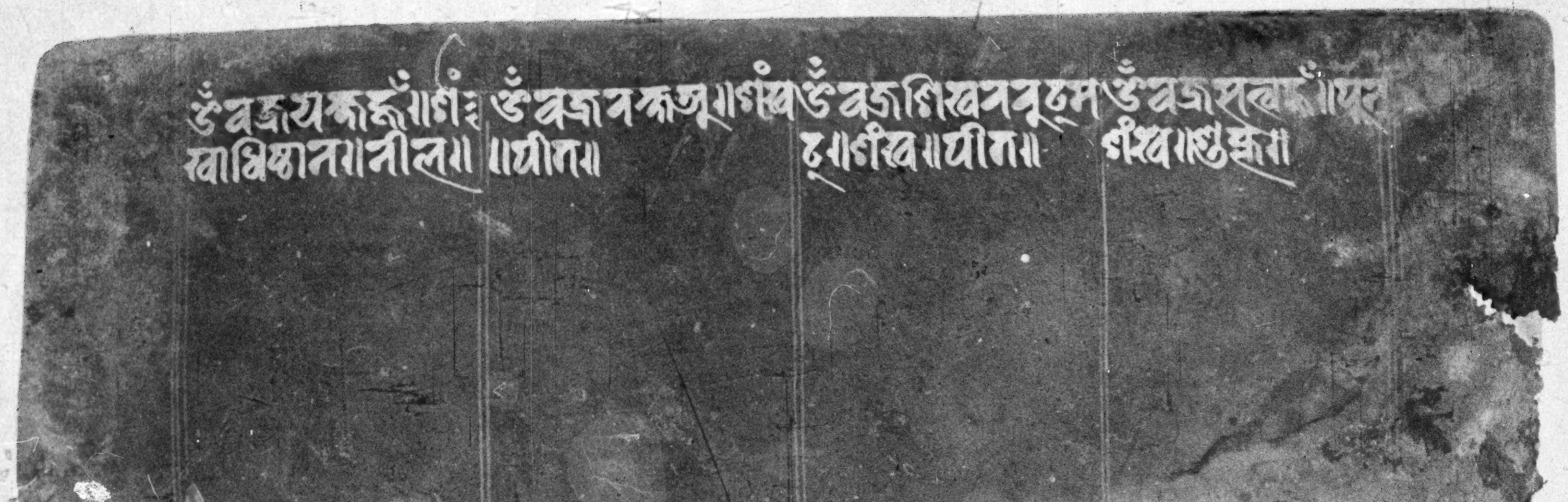
ॐ वज्रायकवचाँहुँ
ॐ वज्रनेत्रत्रयंवौषट्
ॐ वज्रशिखरत्रयंहुम्
ॐ वज्रास्त्रफट्

ॐ धर्म्मधातु हूँ ग्रां वं ॐ वज्र वज्र हूँ ग्राह्य ॐ वज्रयुध्य हूँ ग्रायुः ॐ वज्रभूय हूँ ग्रभूय
शुद्ध ग्रा॥ लाशुद्ध ग्रा॥ ध्य ग्रायीत ग्रा॥ ग्राशुद्ध ग्रा॥

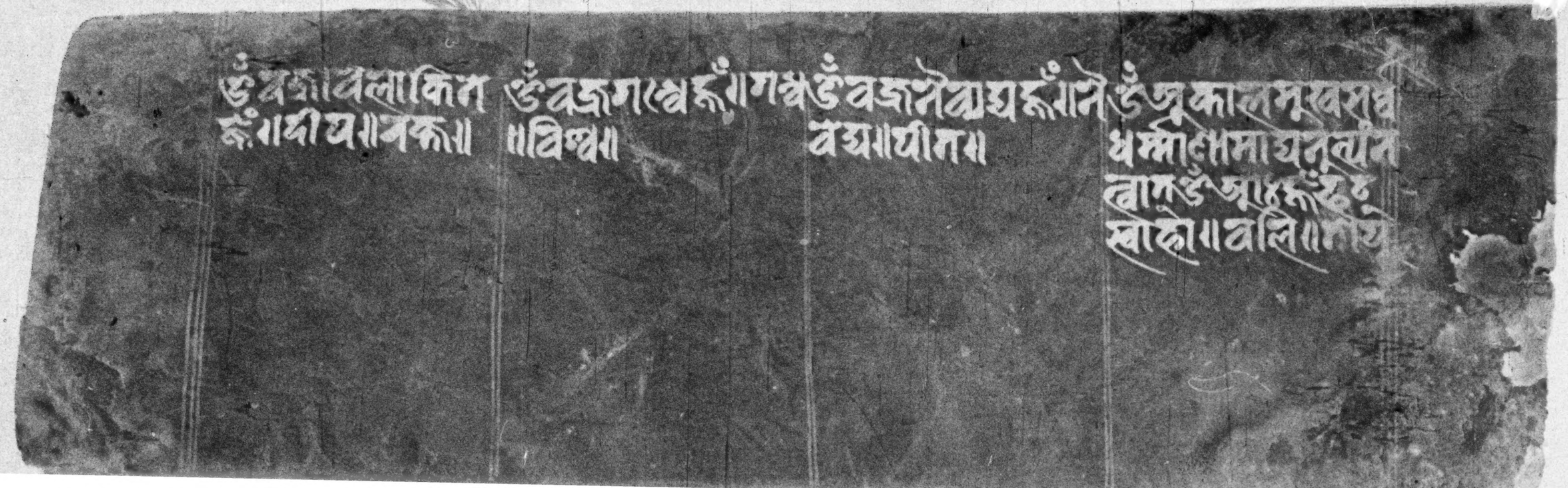
ॐ वज्रावलोकिते हूँ रागादीन् यामय हूँ फट्
ॐ वज्रगन्धे हूँ गन्धर्व विघ्नान् हूँ फट्
ॐ वज्रनेवाद्य हूँ नाट्यगीत वाद्यादीन् हूँ फट्
ॐ वज्रकाल मुखस्य धर्मोल्लासाय वज्रुलाय स्वाहा ॐ वज्रमुखे हूँ हूँ स्वाहा

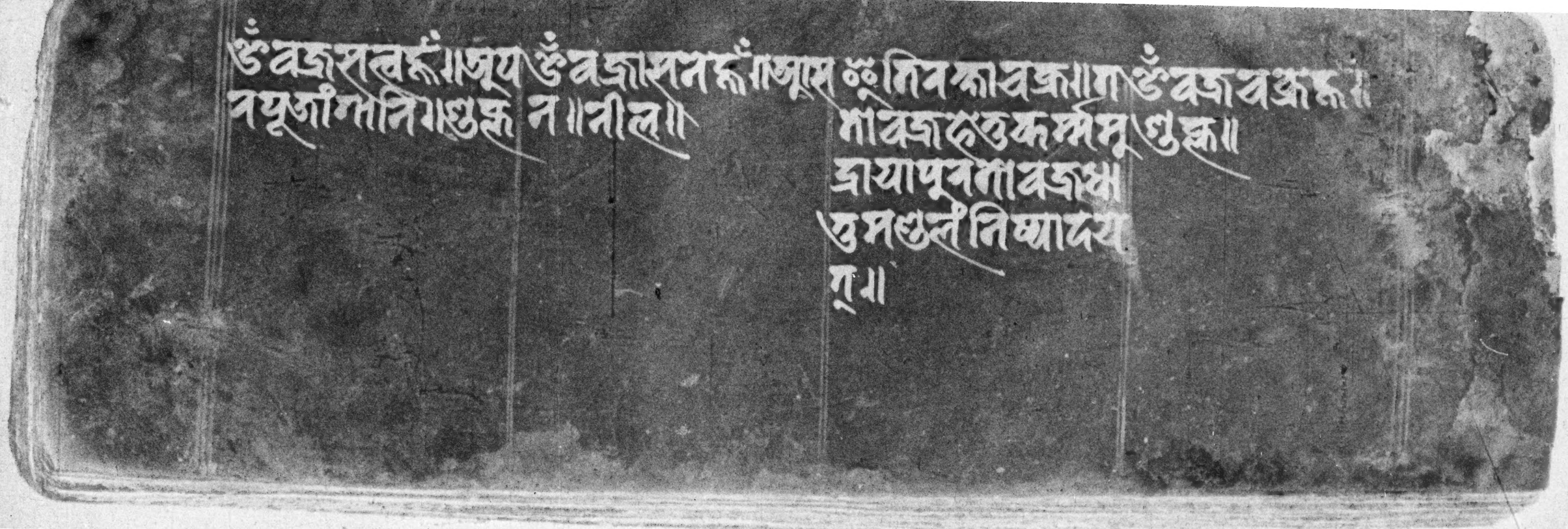
ॐ वज्रसत्त्व हूँ आजूय ॐ वज्रासन हूँ आजूस
वयूजीग्लानिगछ्छ न ॥नील॥
ॐ वज्रावज्र हूँ ॥
वज्रहस्तुकर्म्मसू गुह्य ॥
ह्रायापुनर्वज्रश्च
स्तुमण्डलं निर्यादय
गुरु ॥

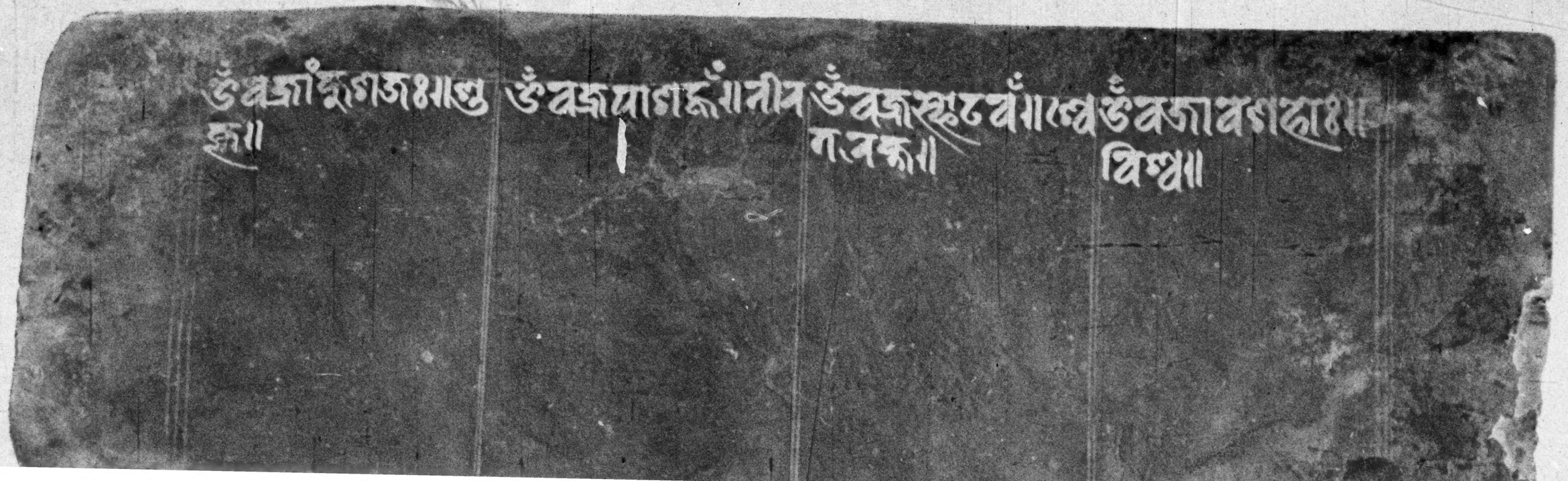
ॐ वज्रजाँ कुरु गजः मालु
झः॥
ॐ वज्रयोगः कुँ गानीम
ॐ वज्रसहः वँ गाल्वे
गः वक्षः॥
ॐ वज्रावेशाहाः॥
विस्फो॥

ॐ वज्रमुद्भव वसत्कारायार्घं प्रतिच्छ स्वाहा ॐ वज्रमुद्भव वसत्कारायया
र्घं प्रतिच्छ स्वाहा ॐ वज्रमुद्भव वसत्कारायोद्वसतं प्रतिच्छ स्वाहा ॐ जूं वसतां
ॐ वज्र वज्रीं प्रा क्रमतां ॥ गगनापृथ्व्यंन्ताग्नमण्डल ॐ वज्रमुद्भवं मसत्या
ॐ सत्व वज्रीं रूं ॥ पूर्व ॐ सत्व वज्रीं यां ॥ दक्षिण ॐ धर्म वज्रीं ज्रीं ॥ पश्चिम ॐ क्ष
र्म वज्रीं जूः ॥ उत्तर ॐ वज्र सत्वं ॥ जूं ॥ ऊर्ध्व ॐ वज्र वज्रजः ॥ सर्व ॐ वज्र वा
हा ॥ वाम ॐ वज्र साधुसः ॥ पृष्ठ ॐ वज्र नत ॐ ॥ जूं ॥ ग्नि ॐ वज्र वज्रजः ॥ सर्वा ॥

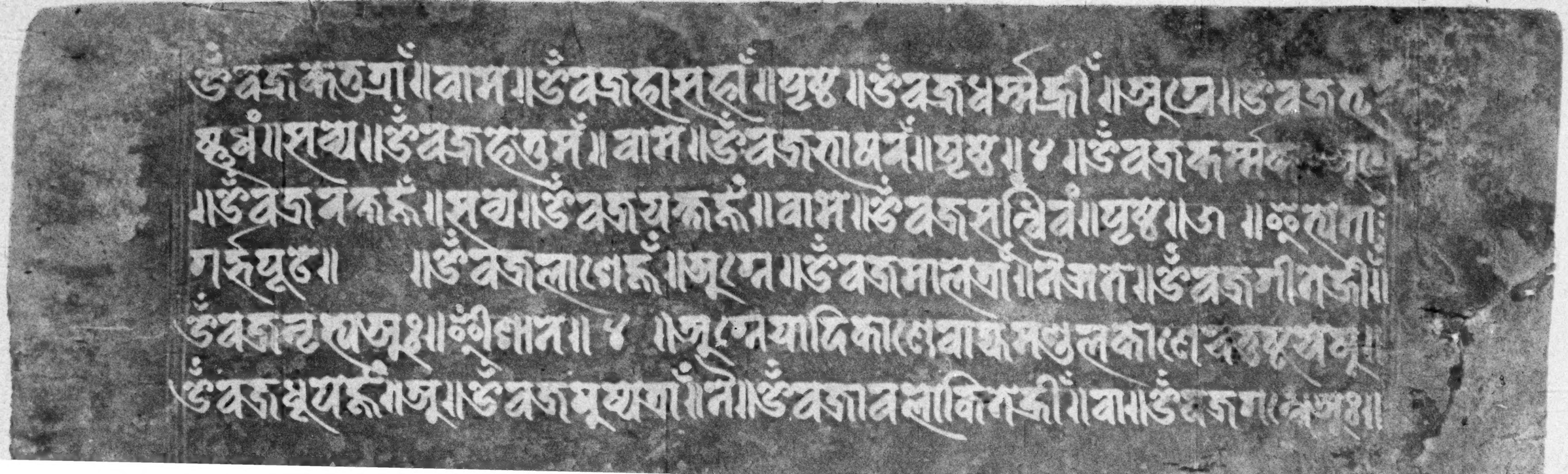

ॐ श्रीमातर्मयूरवादिनि विद्याश्रयाय ॐ मेधीस्फुलाय स्वाहा ॐ जूँ मायवर्णी नमः
ॐ सर्वेषां यक्षराक्षसानां विद्रोधनीं हूँ ॐ सर्वशोकतमोनिघातनमणिं हूँ
ॐ गन्धर्वकिन्नरं हूँ ॐ भूतलंगमं हूँ ॐ गगनलंगगनलावनं हूँ ॐ ह्रां नमः
वणिं हूँ ॐ यक्षिणीं ॐ जूँ सः त्रैलोक्यजूँ सः वणिं हूँ ॐ वज्र वज्रस्फ वज्रवलाक्षिणीं स्वा
हा ॐ रक्षवतीं रक्षयालं हूँ ॐ कालनीं महा कालतीं हूँ ॐ यक्षिणी ॐ वज्रगं
ॐ जूँ क्षयं हूँ जूँ क्षयं कर्मावरणविद्रोधनीस्वाहा ॐ यक्षिणी स्फुलस्वाहा ॐ सम

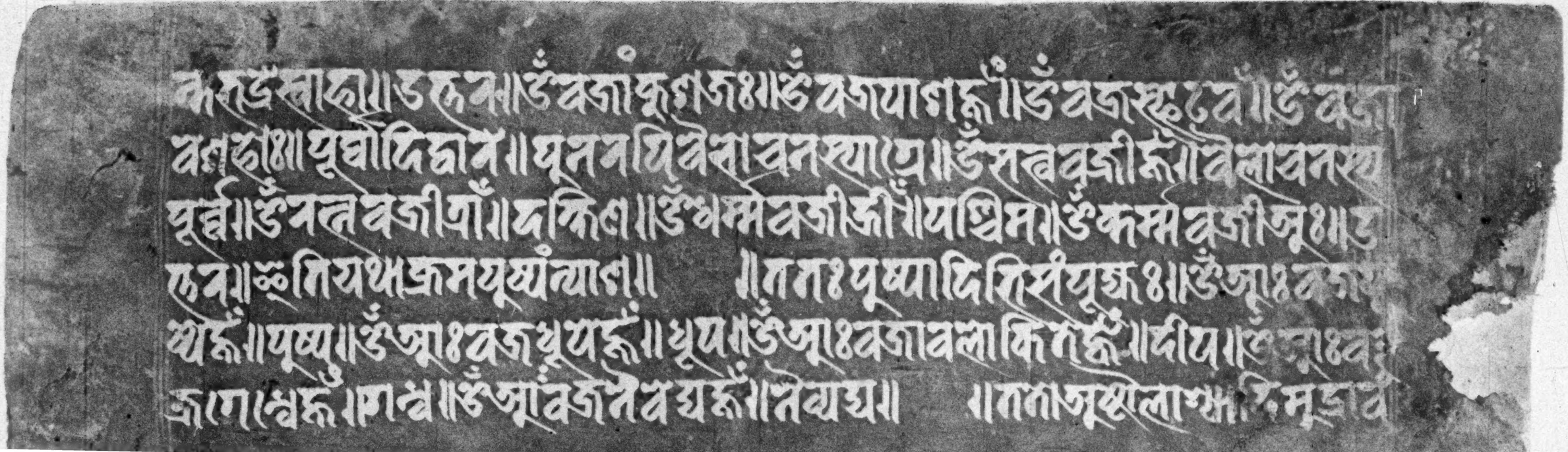

क्रियात्मा ॐ सर्वगथा ॐ सर्वगथा गमा रु व ॐ सर्वगथा गमा रु ॐ सर्वगथा गमा रु
गमा मरोव जा रु व शीलया वमिमायू व क्रोक्रियालमिमो वमरावीर्योगा मि
दानया वमिमायूरु रुर्जी॥ यीगा॥ यूरुजी॥ वक्रा॥ मायूरुमूर्धा
र्धायुरु॥

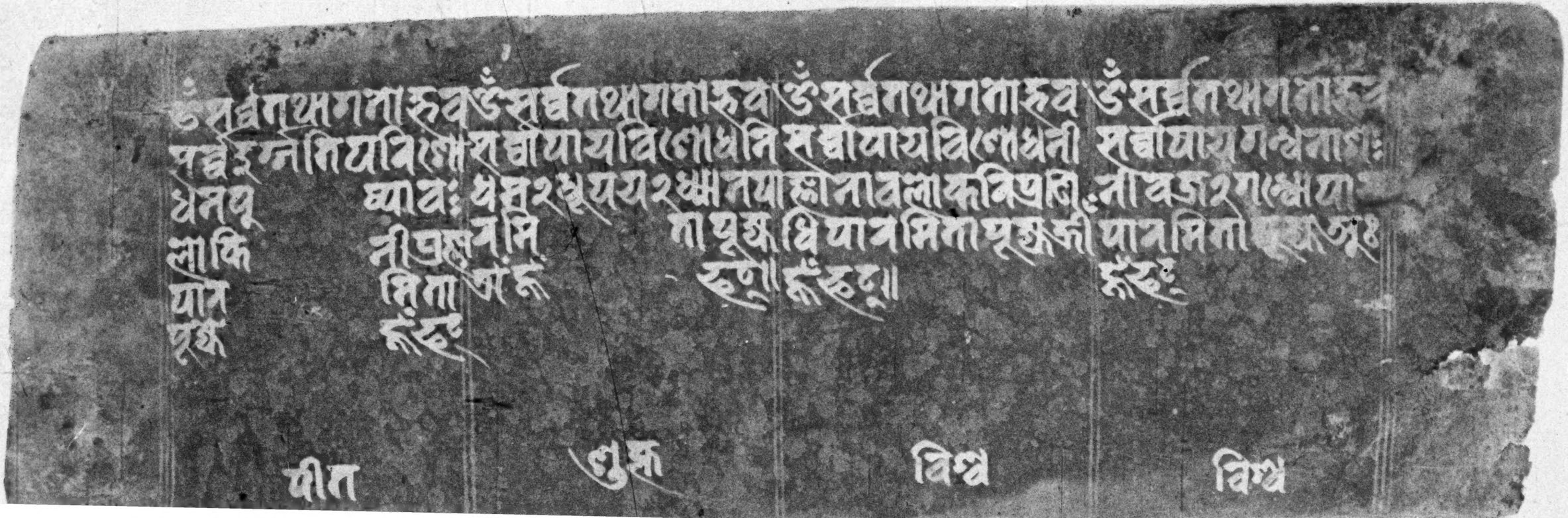
ॐ सर्वतथागतास्त्र ॐ सर्वतथागतास्त्र ॐ सर्वतथागतास्त्र ॐ सर्वतथागतास्त्र
सर्वोपायविशोधनि सर्वोपायविशोधनि सर्वोपायविशोधनि सर्वोपायगगनतेजः
धनञ्जय व्यावः धनुरुद्भव रश्मितया ज्वालावलोकनिधनि नीवजरगर्भाय
लाक्षि नीलवर्णमि तापूरुधियावर्णमि तापूरुधी यावर्णमि तापूरुजः
यान मिता जंकू रणा कूंहुंद्॥ कूंहुं
पूरुष कूंहुं
पीत शुक्ल विश्व विश्व

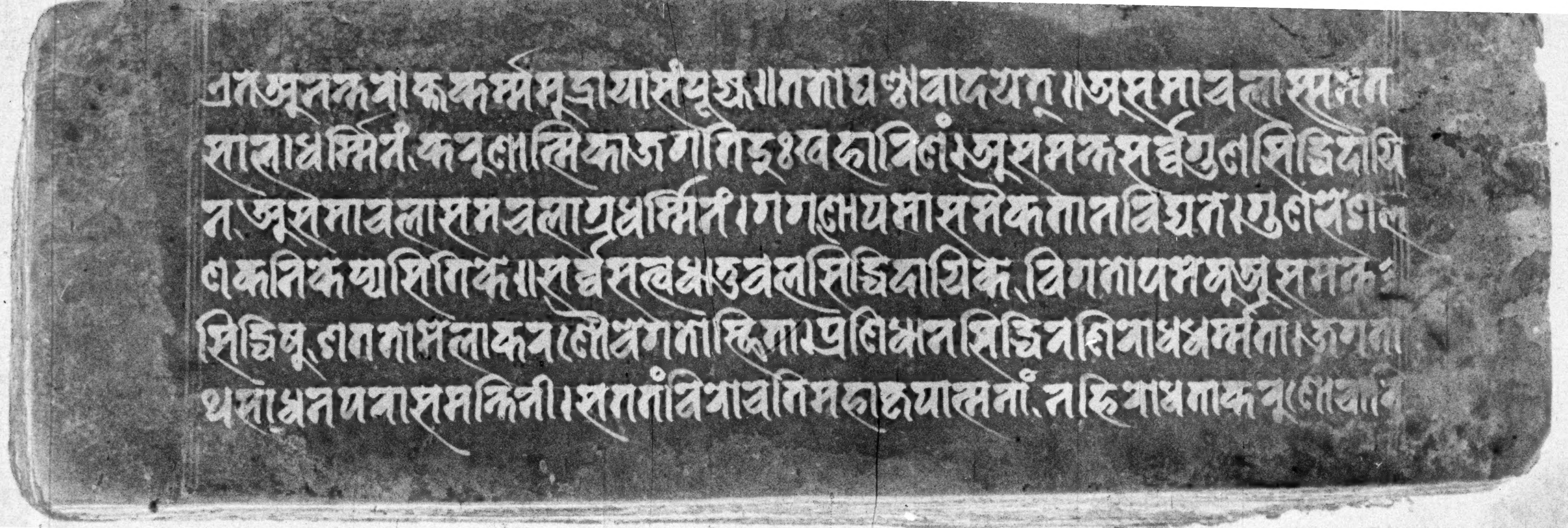

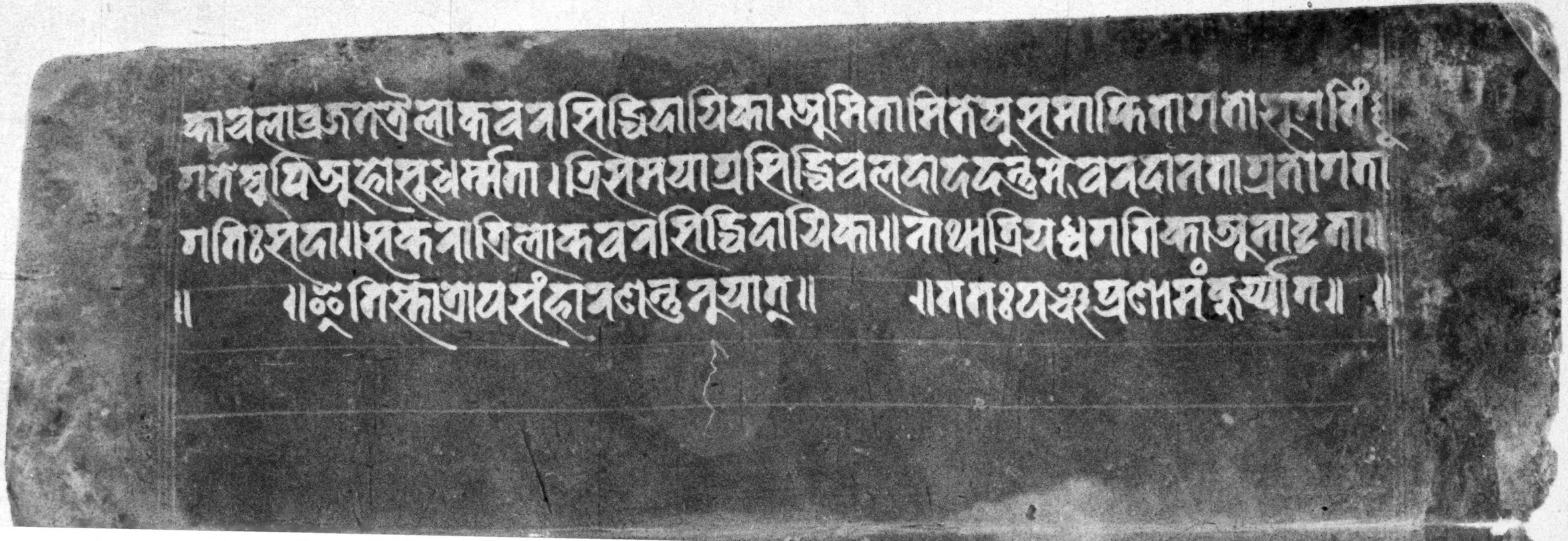

ॐ सर्वतथागतकाय वाङ्मनःप्रसादवज्र वंदनाकरोमि ॐ सर्वतथागतपूजाय स्वाहा

ॐ सर्वतथागतपूजाः शिक्षकायात्मानंनि योतयामि ॐ सर्वतथागतपूजाय स्वाहा

ॐ सर्वतथागतगुण कीर्तनात्मानंनियोतयामि ॐ सर्वतथागतगुणवज्रधर्मेश्वरि स्वाहा

ॐ सर्वतथागतपूजाक र्मसिद्धात्मानंनियोजयामि ॐ सर्वतथागतपूजाकर्मवज्रकर्मे फूट्वं स्वाहा

॥

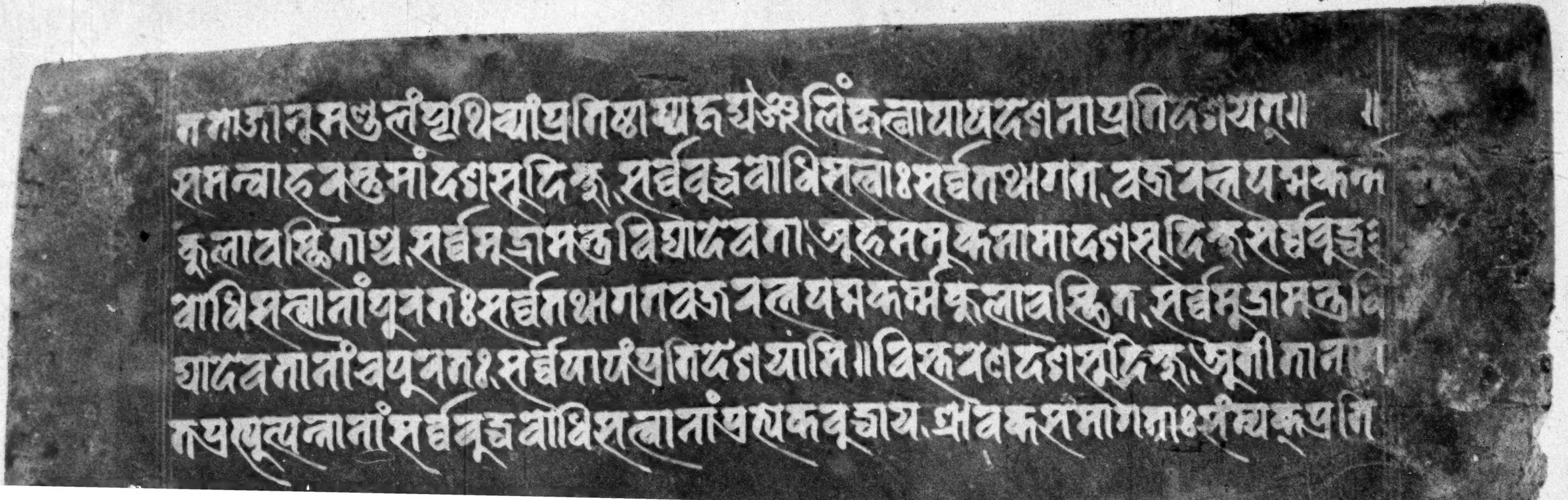

यन्तानां सर्वसत्वनिकायानाञ्च सर्वयूथ्यानुमादयासि ॥ दशसुदिक्षु सर्ववुद्धा
गवतास्त्वावलिधर्मचक्रान्तर्धा धर्मचक्रप्रवर्तनाय दशसुदिक्षु सर्ववुद्धा
यत्रिनिर्वृतिकामानांयावज्जगत्रिनिर्वृतिकरा ॥ ॐ सियायदगना ॥ गगनां
विंशतिपूजांकुर्यान्मन्त्रमुच्चारयन्नमः ॥

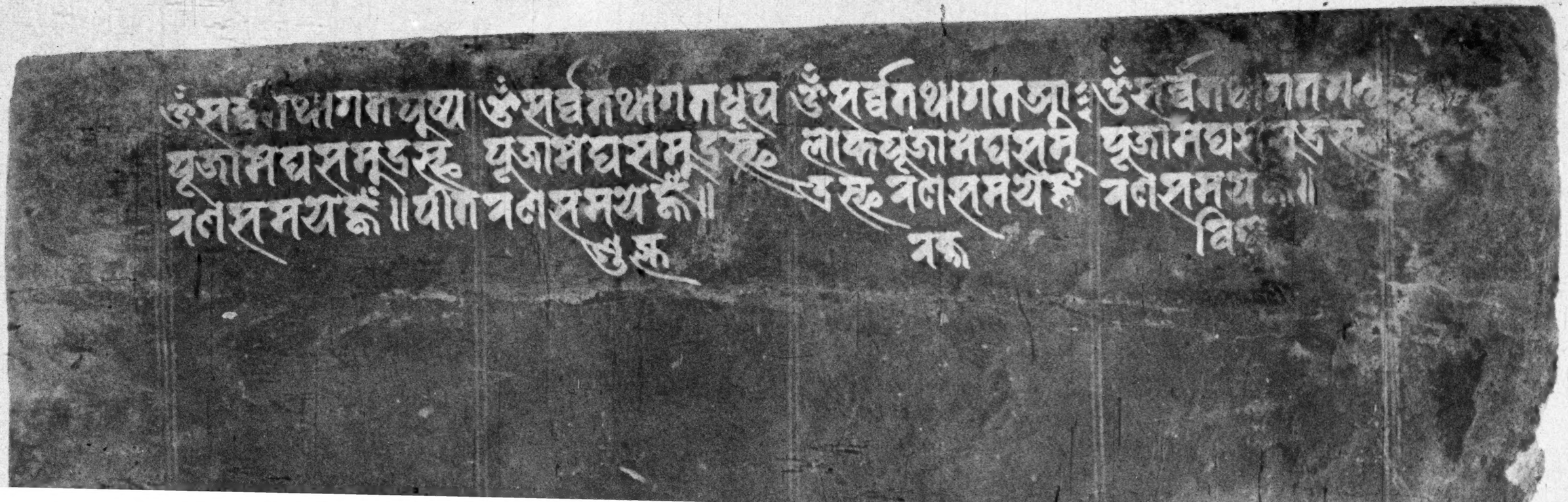
ॐ सर्वतथागतपूजा पूजामेघसमुद्र वलसमय हूँ ॥ योग
ॐ सर्वतथागतधूप पूजामेघसमुद्र वलसमय हूँ ॥ धूप
ॐ सर्वतथागतपु लोकपूजामेघसमु द्र वलसमय हूँ ॥ वज्र
ॐ सर्वतथागत पूजामेघस वलसमय ॥ वि

ॐ सर्वतथागतवाक्ष ॐ सर्वतथागतहास्य ॐ सर्वतथागतवाक्षं ॐ सर्वतथागतवज्र
समतालीकालयूजा लाम्बनगिजीतसो मवस्तालीकालयूजा यूजासघसमुद्रस्व
भावसमुद्रस्वभावसोहं वयूजासघ सघसमुद्रस्वभावसोहं समयमनुपालय
मयमूं। पीत समुद्रस्वभावसमयमयमूं॥ विघ्न
मूं॥ नक

ॐ सर्व तथागत समा ॐ सर्व तथागतानु ॐ सर्व तथागत
वज्रा रु वेशान याव वबाक्ष रा कणीव मधर्मा वबाध कान्ति मय त्रिया मनुष्ट
मिता पूजा मघ सम्भ यान मिता पूजा मघ यान मिता पूजा मघ वीर्य यान मिता पूजा
ङ स्फ ल समय कू॥ समूड स्फ ल समय समूड स्फ ल समय भव समूड स्फ ल समय
लु लू कू॥ यीत कू॥ नक मय कू॥ वि

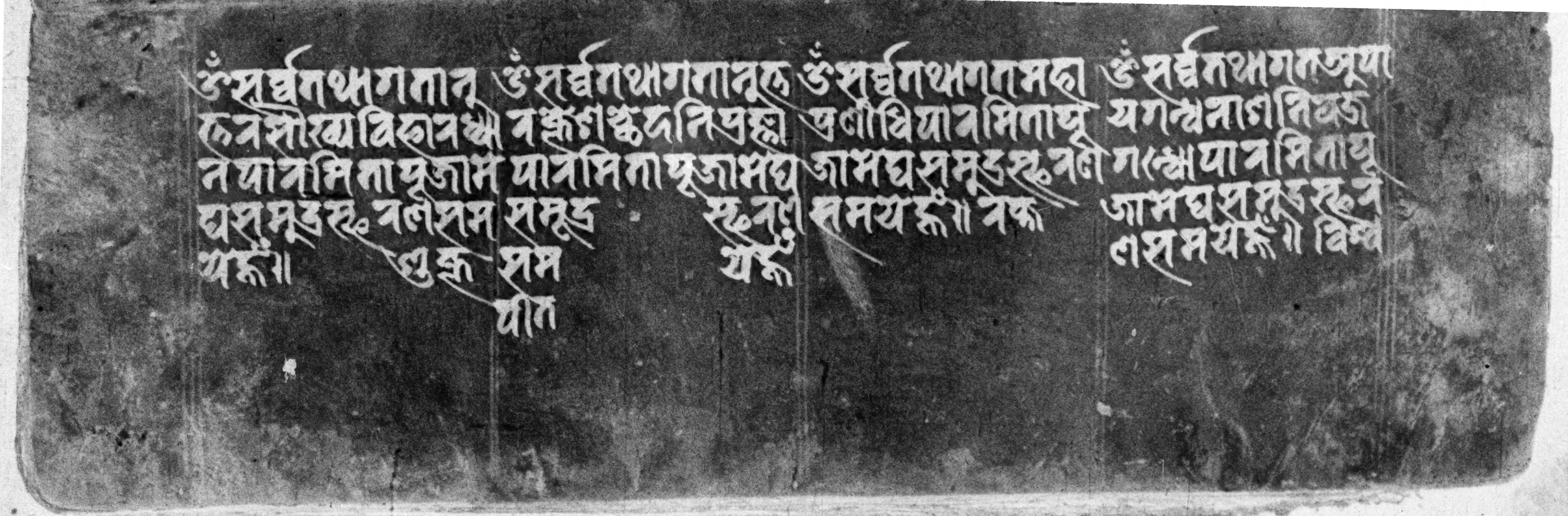

ॐ सर्व तथागत काय ॐ सर्व तथागत वाक् ॐ सर्व तथागत चित्त ॐ सर्व त
नियात न पूजा मेघ नियात पूजा मेघ से नियात न पूजा मेघः नियात न समुद्र
समुद्र वेल समु मुद्र वेल समय वेल समय वेल समय
यह्नी ल्वत वक्र रूंग नील

एवं विंशतियूजातिप्रकारान् सर्वतथागतासंयूक्तमातंत्रियोतयूजूक्तमातं
सर्ववृक्षवाधिसत्वयशत्रियोतयामि. सर्वदा सर्वकालं प्रतिपूरकत्वं मां सत्वा
नूनिकानाथसमयसिद्धिकरमयस्वगतश्च कुशलमूलं. सर्वसत्वसाधनं कर
वीसाजूतनकुशलमूलन. सर्वसत्वाः सर्वलोकिकलोकोत्तरविद्यर्द्धिविगतास्तवत्व
सर्वलोकिकलोकोत्तरसंपत्तिसमन्विताश्च सदैवसुखन. सदैवसोमनस्यनवृद्ध
रुवन्तनसाधनसाधाजूतनवाहि कुशलनकर्मणा. रुवयूवृद्धीसिद्धिलोकोत्तरी

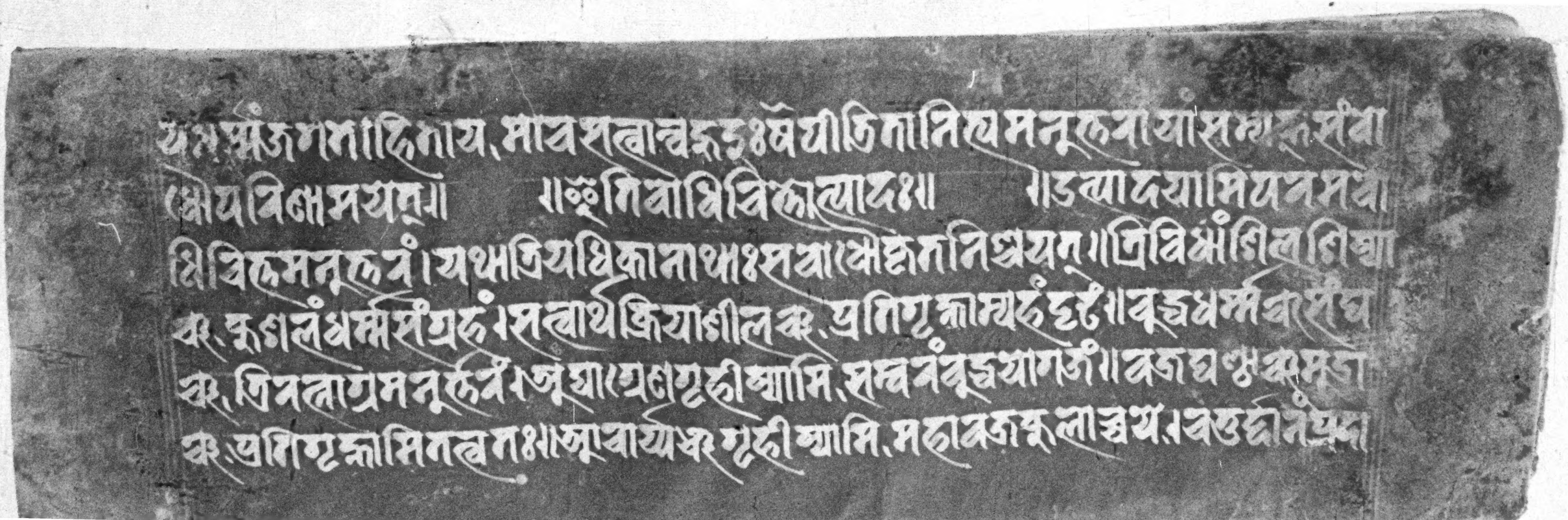

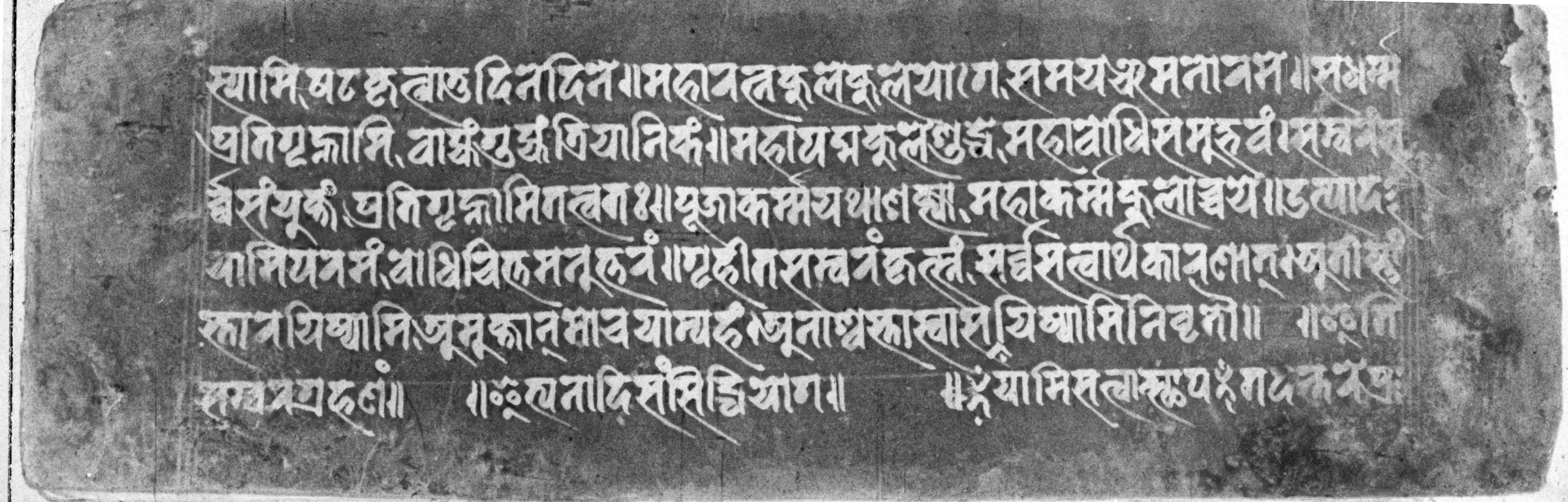

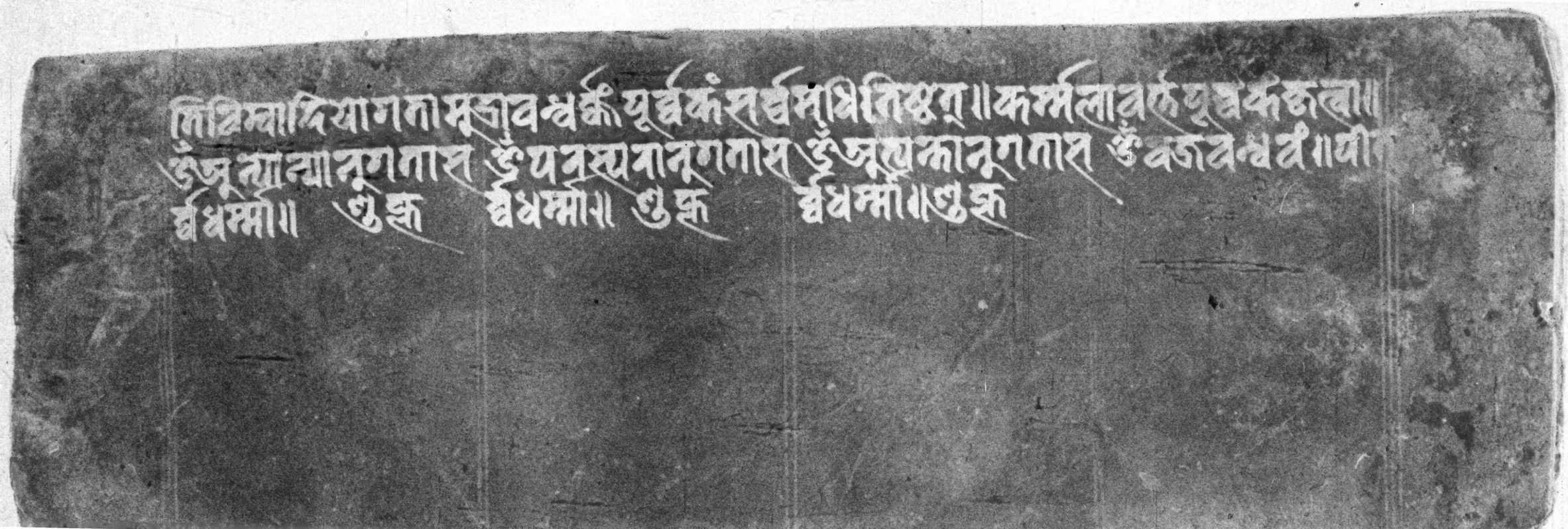
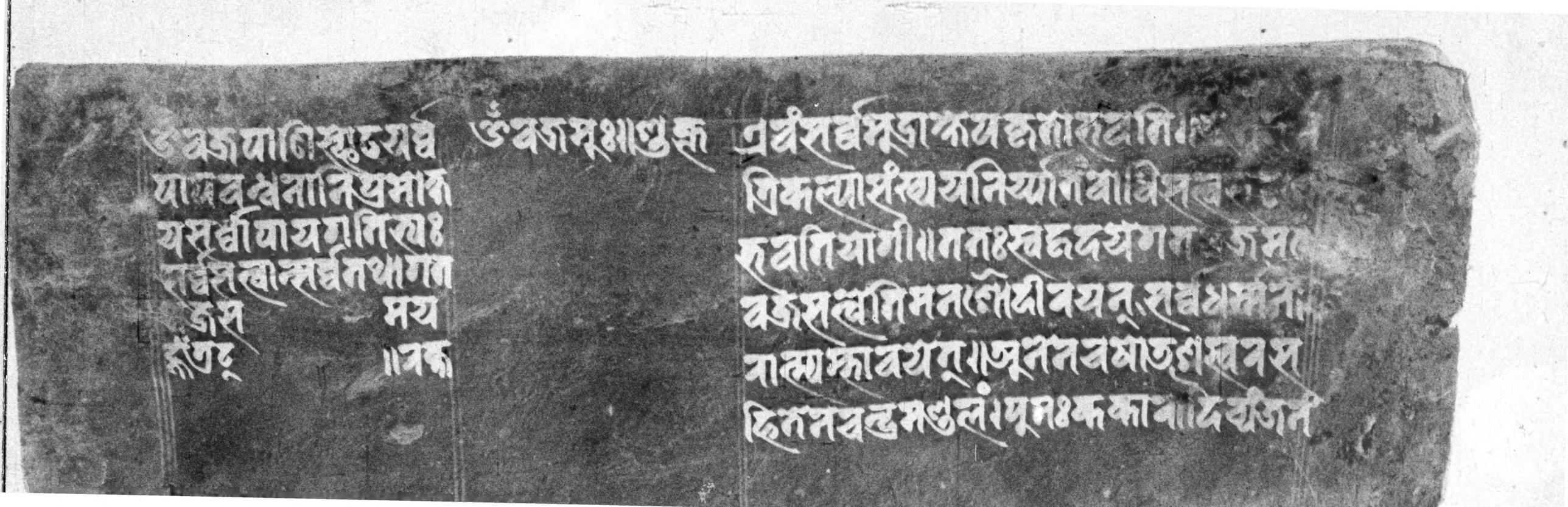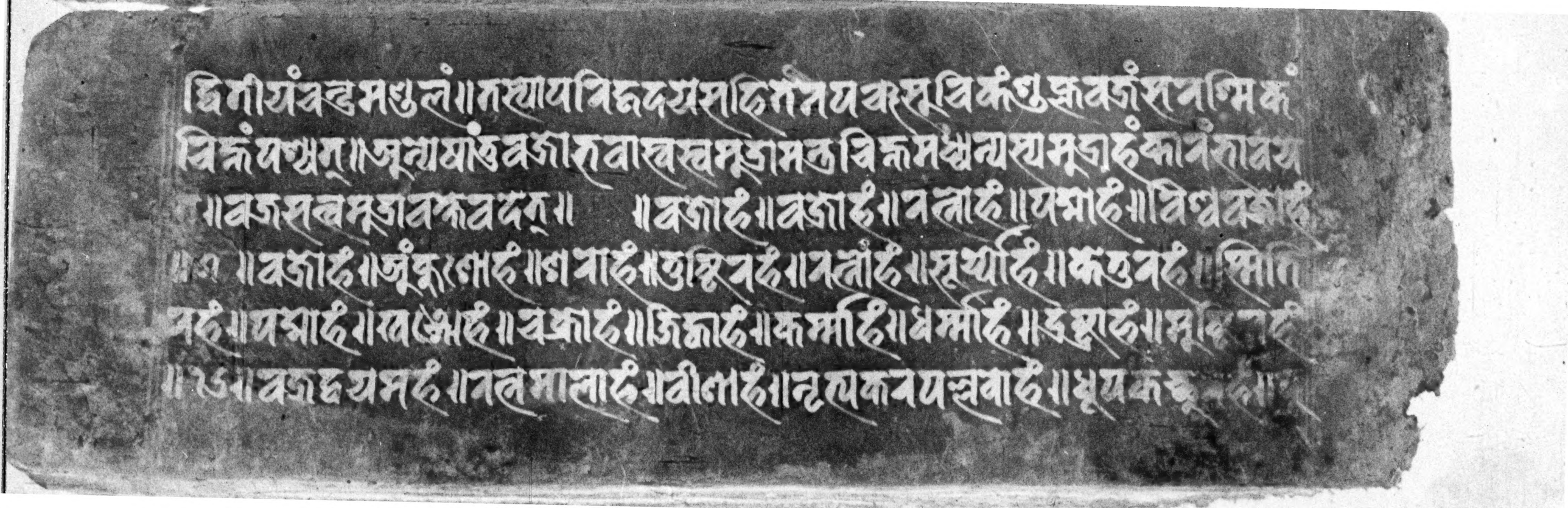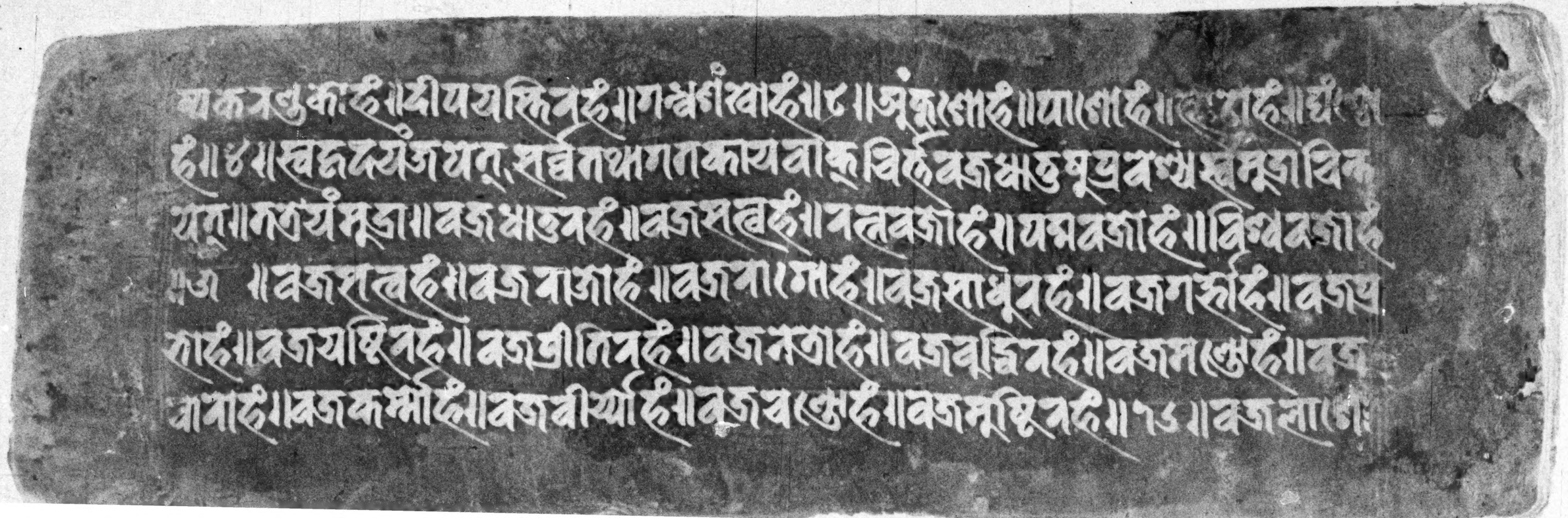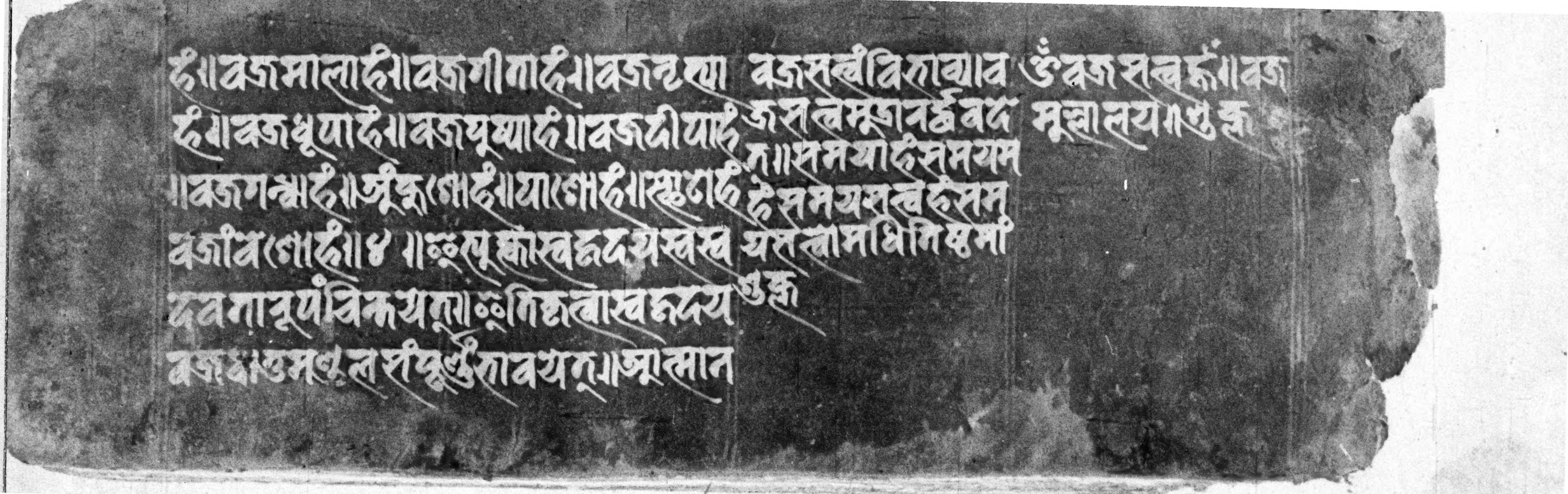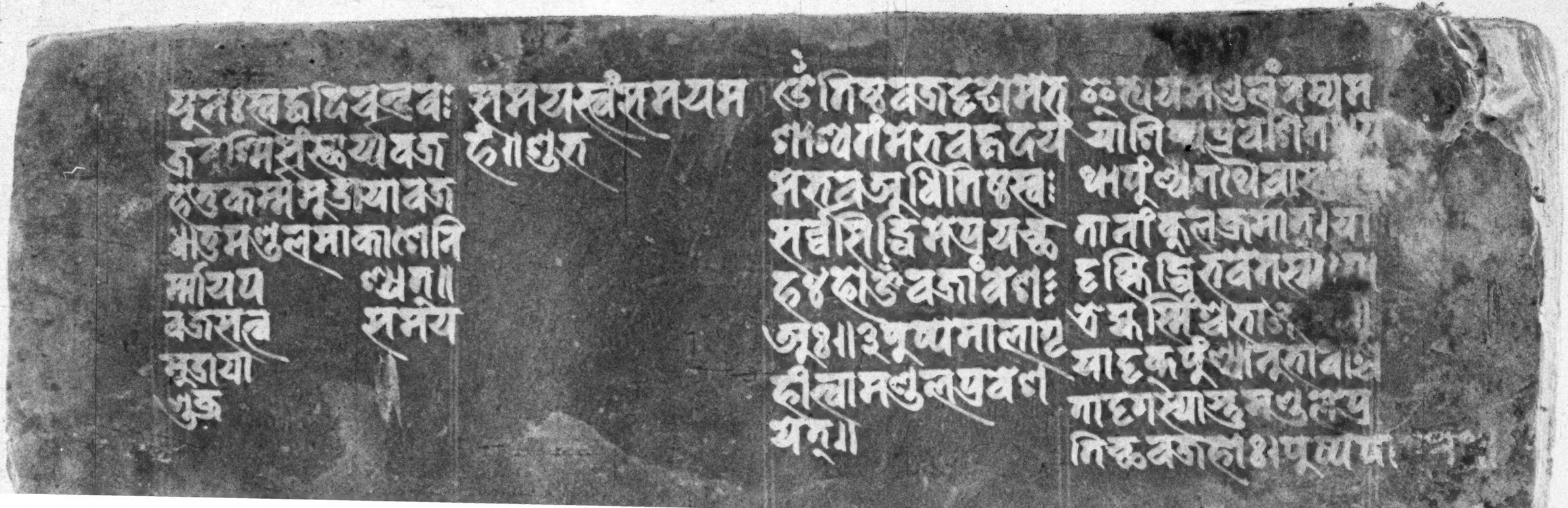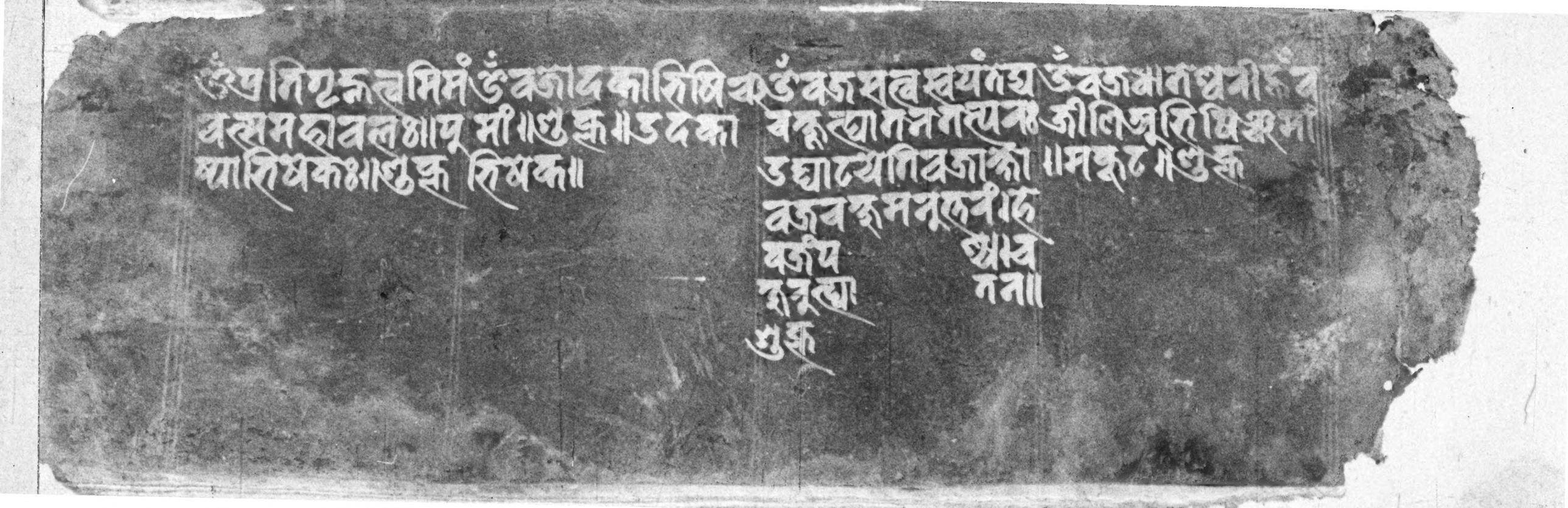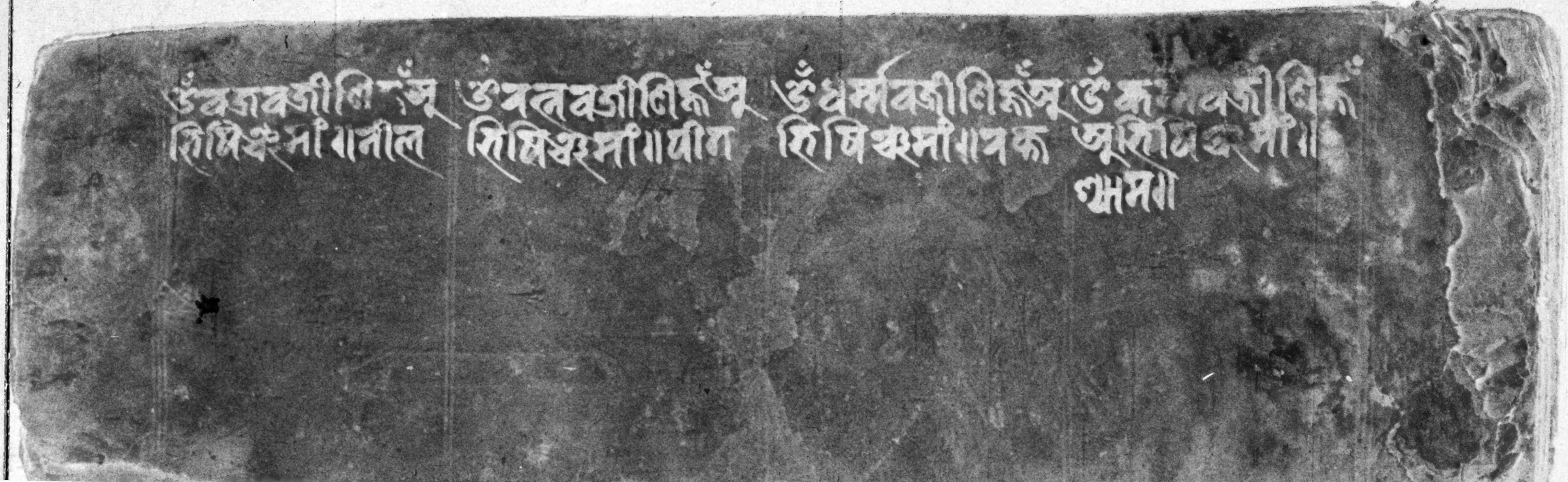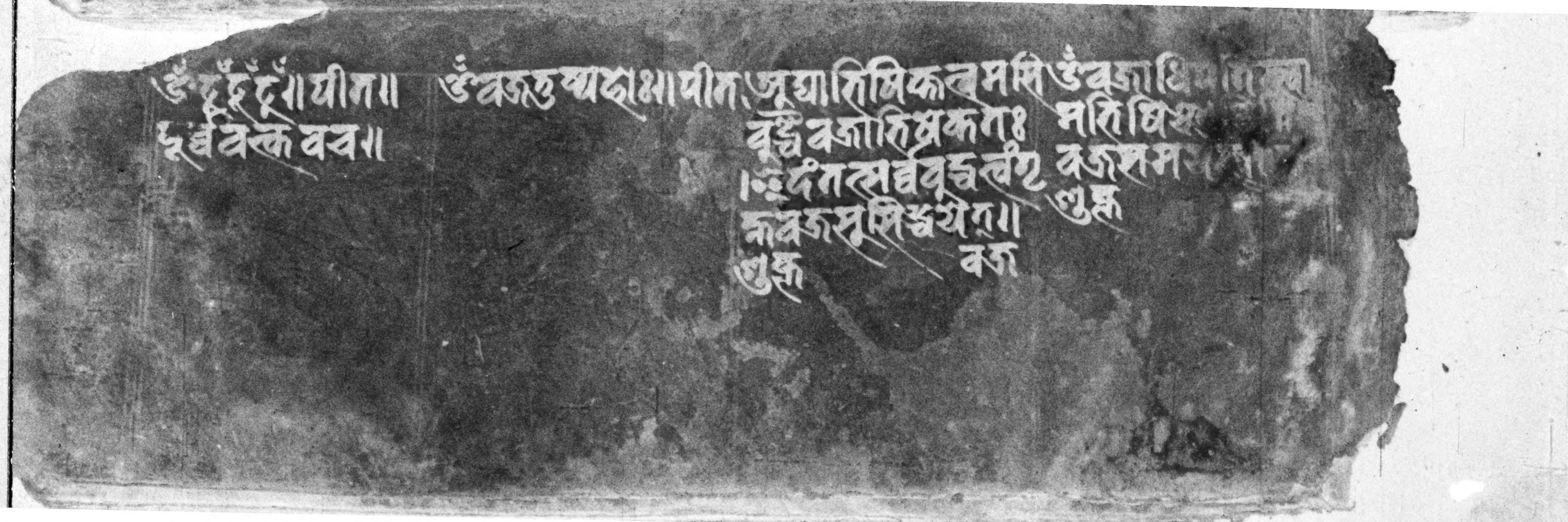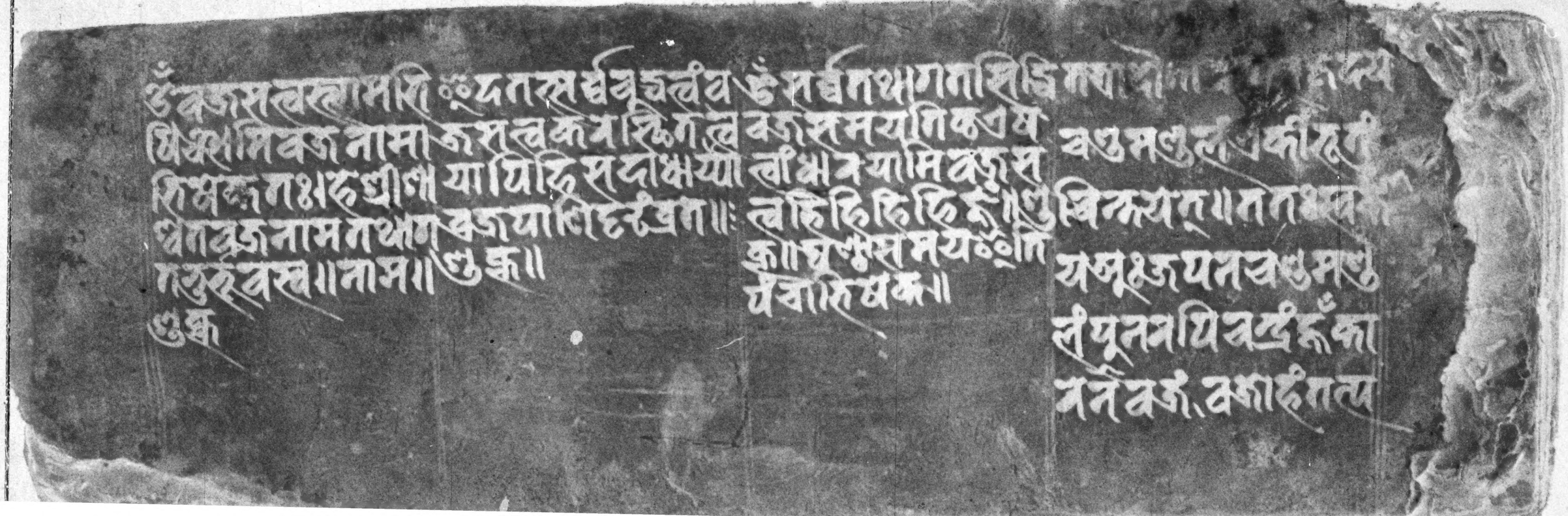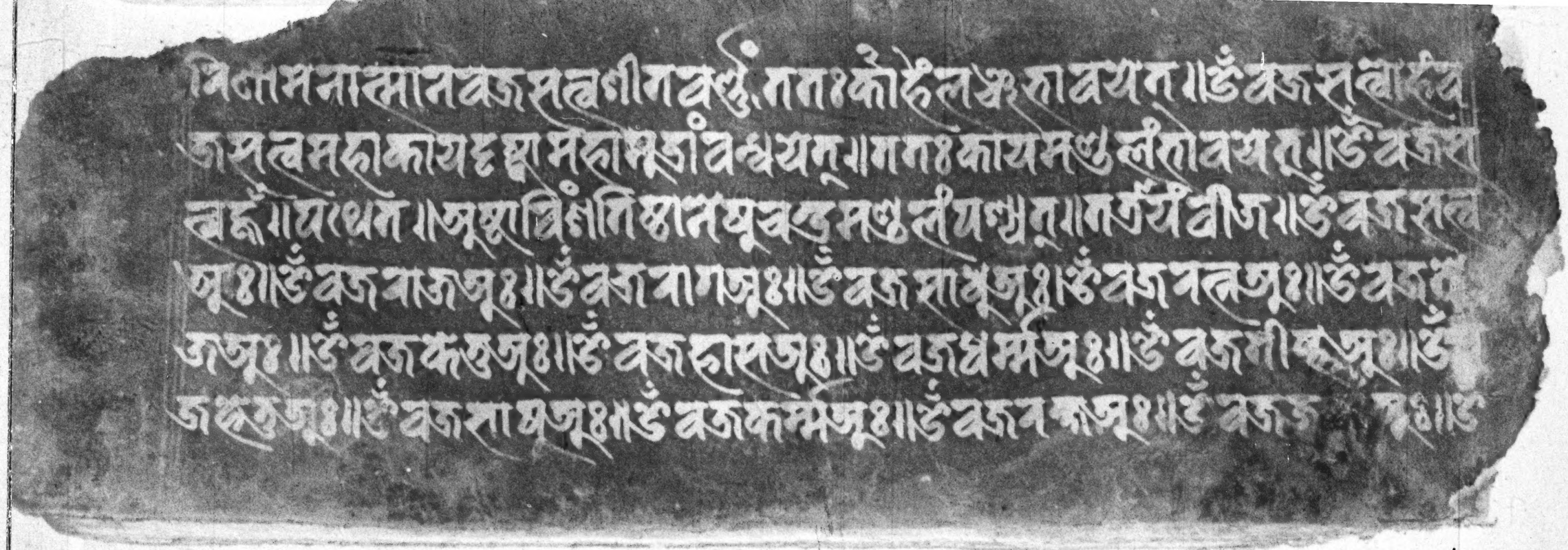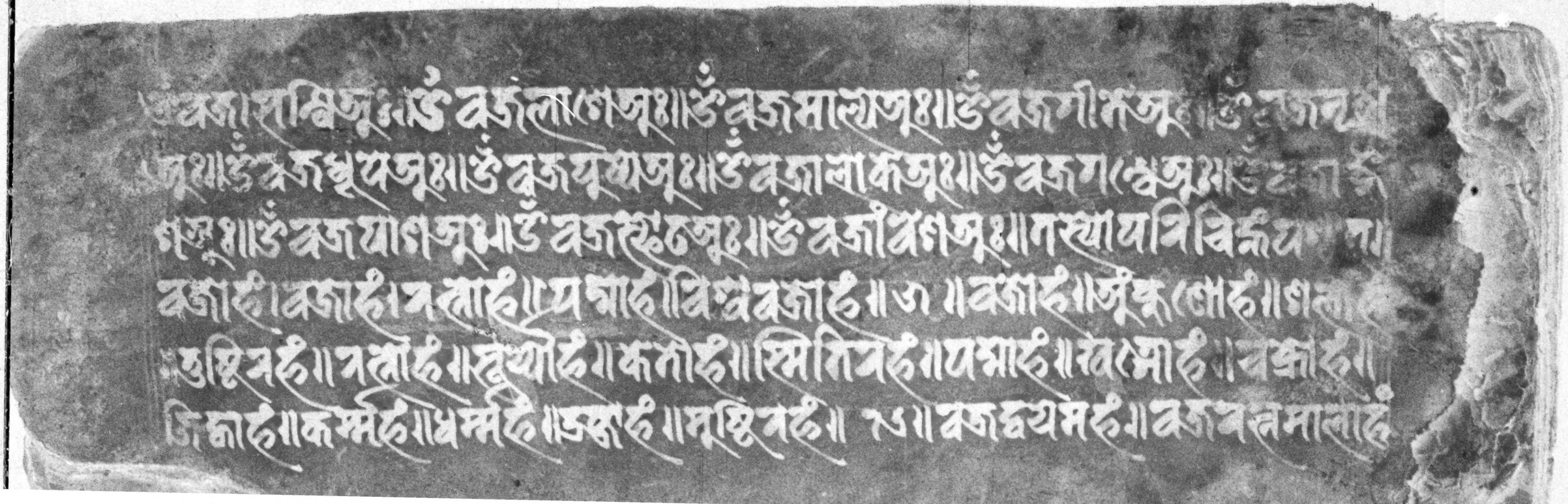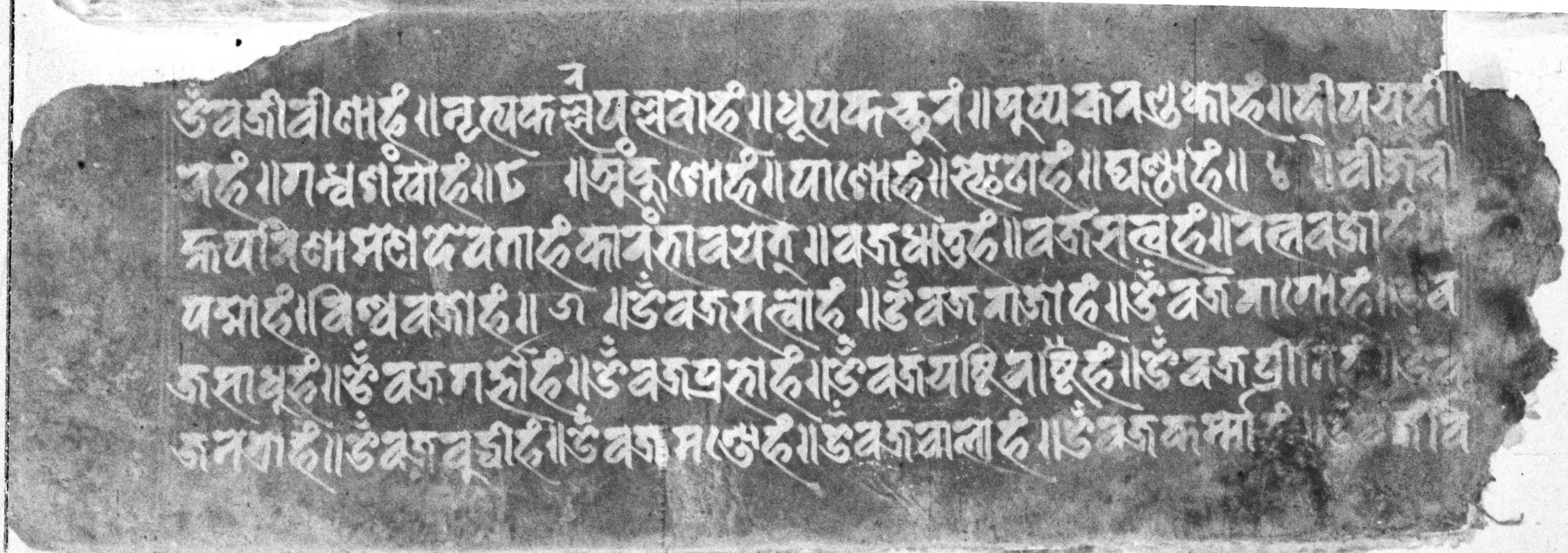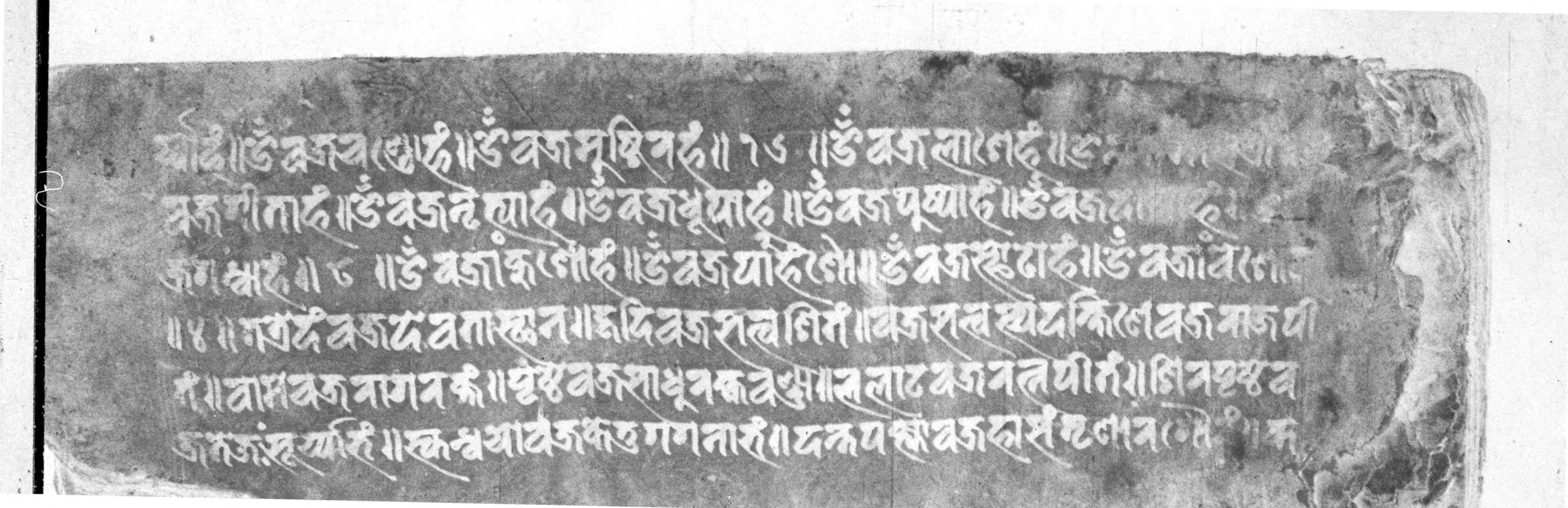
ॐ वज्र वज्रऽ॒ ॥ ३॥ ॐ शिष्ट वज्र हृदामस्र ॐ यन्मस्य मानुगमास ॐ सर्व्वा या याकर्म्मणा
यीत ॥ वज्रा थ्वगमस्र वज्रधि ध्वम्मा ॥ ॐ वज्र वृष्टि विशोधन वज्रसमः
शिखं हृदय मस्र वं वं ॥ यक्ष ऽ॒ ॥
सर्व्वसि द्विम पय ऽ॒ कृ
ऽ॒ ॥ ॐ वज्रा वज्रा
॥ शुक्ल